Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to establish an international Research Institute of Yoga and Ayush in Uttarakhand.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): मै देवभूमि उत्तराखंड से आता हूँ और यह मेरा परम सौभाग्य है कि इस गरिमामयी सदन में मैं विश्व की योग और अध्यात्म की राजधानी हरिद्वार का प्रतिनिधित्व करता हूँ जहाँ पर सम्पूर्ण विश्व से लोग योग व अध्यात्म की खोज के लिए आते और आनन्द उठाते हैं।

आयुर्वेद अर्थात आयु का विज्ञान एक शाश्वत चिकित्सा पद्धति है जो न केवल तन को बल्कि मन और मस्तिऐक को स्वस्थ करने की बात करती है। विश्व के 60 प्रतिशत से अधिक लोग पारम्परिक दवाइयों को उपयोग करते हैं। चरक सहिंता और सूश्रुत सहिंता में हजारों पादप परिवारों के पौधों का वर्णन है और मुख्यतः हिमालय ही इनका उद्गम स्थल है। आयुष मंत्रालय द्वारा हिमालयी क्षेत्रों के औषधीय पौधों पर अनुसंधान हेतु नया केद्र प्रस्तावित है। विकसित देशों से 40 प्रतिशत से अधिक लोग जड़ी-बूटी का सेवन करते हैं। भारत की 70 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण जनता आयुर्वेदिक दवाइयों पर निर्भर है। आयुर्वेद की लोकप्रियता पूरे विश्व में लगातार बढ़ रही है हम सौभाग्यशाली हैं कि प्रकृति ने हमें आयुर्वेद जड़ी-बूटियों का असीम खजाना दिया है। पिछले कुछ वर्षों से आयुष क्षेत्र में 20-25 प्रतिशत की विकास दर देखी गई जो कि अत्यंत उत्साहजनक हैं। उत्तराखंड देवभूमि होने के साथ पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील राज्य है। जैव विविधता के क्षेत्र में विश्व के श्रेष्ठ स्थानों व हिमालय से घिरा यह प्रदेश 65 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र से आच्छादित है। ऐसी स्थिति में आयुष संबंधी किसी भी महत्वाकांक्षी योजना के लिए यह एक स्वाभाविक केद्र है। योग एवं आयुर्वेद में संस्कृत की महत्ता के मद्देनजर हमने इसे द्वितीय राजभाषा

बनाकर प्रदेश और देश को गौरव बढ़ाया है। मेरा संसदीय क्षेत्र हरिद्वार तथा ऋषिकेश योग एवं अध्यात्म की राजधानी है। अतः विनम्र निवेदन है कि उत्तराखंड में योग एवं आयुष का अंतर्राष्ट्रीय शोध संस्थान स्थापित करने की कृपा करें। उक्त शोध संस्थान में योग एवं आयुर्वेद पर शोध के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संसाधन जुटाए जायें ताकि भारत और विश्व का कल्याण हो सके।